पद ३०

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

नित्य वंदू त्या माणिकपायां। प्रणवरूपें भासे ही जेथे माया।।धु.॥ पूर्णकृपें कृपा बोलवेना। अनुभवें अनुभवही साहीना। बोधें बोद जाहली कल्पना। मृत्यु पावली स्फूर्ती वासना।।१॥ अहंब्रह्मास्मि वृत्ती गळाली। ऐक्यतेची समाधि हरपली। शून्यविद्येची वार्ता निमाली। कवणा सांगू हे गित कैंसी झाली।।२॥ ज्ञानमार्ताण्डोदय झाला। भास विवर्त विरोनी गेला। सहज माणिक होऊंनि ठेला। हा ही अर्थ समूळ वाया गेला।।३॥